بسم الله الرحمن الرحيم

لا إله إلا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 24
Issue - 12

राह-ए-ईमान

दिसम्बर
2022 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

संपादक - मंडल
फज़ल नासिर

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन.......... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी.......... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ)..........4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 21.10.2022)..........8
7. क़ुरआन की विशेषताएं (क़िस्त-2)..........12
8. हुज़ूर अनवर ख़लीफ़तुल मसीह का अमरीका दौरा अक्टूबर 2022..........23
9. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें..........32
10. जलसा सालाना (वार्षिक सम्मेलन क़ादियान) का ऐलान..........32

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806,   Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्यः 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

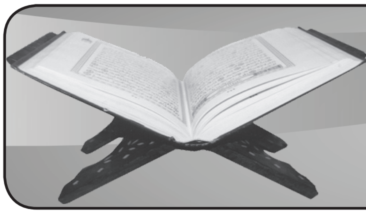

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ
وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا
عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٨

उपरोक्त आयत का अनुवाद: क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है कि आसमानों में क्या है और ज़मीन में क्या है? कोई तीन गुप्त परामर्श नहीं करते परन्तु वह (खुदा) उनका चौथा है, और न ही कोई पाँच लोग ऐसे होते हैं, परन्तु वह उनका छठा होता है, और न कम और न अधिक, परन्तु वे जहां कहीं भी हैं, वह उनके साथ होता है। फिर वह उन्हें क़ियामत के दिन बता देगा कि वे क्या करते थे। बेशक अल्लाह हर चीज़ से भली-भाँति परिचित है।। (अल् मुजादला : 58/8)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सेना भेजी और एक व्यक्ति को उसका शासक नियुक्त किया ताकि लोग उसकी बात सुनें और उसका पालन करें। एक बिंदु पर, इस व्यक्ति ने सड़क पर आग लगा दी और अपने साथियों को आग में कूदने का आदेश दिया। कुछ ने उकी बात नहीं मानी और कहा कि आग से बचने के लिए हम मुसलमान बने हैं। लेकिन कुछ लोग आग में कूदने को तैयार थे। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस बारे में पता चला, तो उन्होंने कहा, "यदि ये लोग आग में कूद जाते हैं, तो अमीर की आज्ञा का पालन करना, जो हमेशा आग में रहता है, प्रसिद्ध लोगों में से है। और अच्छी बातें जानते हैं।" खुले पाप के कार्यों में आज्ञाकारिता अनिवार्य नहीं है। (अबू दाऊद किताबुल जिहाद)

अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि यदि किसी व्यक्ति को अपने अमीर में कुछ अप्रिय या स्पष्ट रूप से बुरा दिखाई देता है, तो उसे धैर्य रखना चाहिए, अर्थात संलग्न रहना चाहिए। जमात के लिए, क्योंकि जो भी जमात से थोड़ा सा भी जुदा करता है और रिश्ता तोड़ता है, वह अज्ञानता की मौत मरता है। (बुखारी किताबुल अहकाम)

☆ ☆ ☆

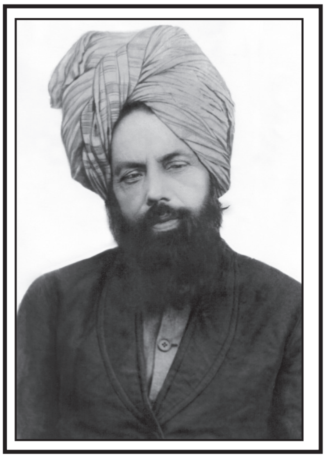

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

ईसा मसीह की बिन बाप पैदाइश में क़ुदरत की चेतावनी

यह अंत खुशी के कारण न था बल्कि नाराज़गी के कारण था। खुद हज़रत मसीह की पैदाइश एक निशान के रूप में थी अर्थात यह कि वह बिन बाप के पैदा हुए। चूंकि नस्ल बाप से जारी होती है। इसलिए हज़रत ईसा को बिन बाप पैदा करके ख़ुदा ने बनी इसराईल को चेतावनी दी कि तुम्हारे बुरे कर्मों के कारण यह सिलसिला को खत्म किया जाता है।

दो बातों को तुमने स्वयं स्वीकार किया है।

पहली- यह कि ख़ुदा ने मसीह को बिन बाप पैदा किया और जो यह कहता है कि उनका बाप है वह ख़ुदा के कानून को तोड़ना चाहता है। और ख़ुदा तआला के इस निशान की जो उसने पैदाइश में रखा हुआ था अपमान करता है।

दूसरी- दूसरी बात जिसको तुम स्वीकार करते हो यह है कि वह ईंट थे। इसका उदाहरण इंजील में बाग वाले दृष्टांत में बयान किया गया है कि एक व्यक्ति ने बाग लगाया। उसके तैयार होने पर नौकर को भेजा इत्यादि इत्यादि------इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि ख़ुदा तआला की कृपा और दया यहूद पर खत्म हो गई थी। फिर तीसरी निशानी इस बात पर यह है कि मूसवी सिलसिला का अंत मसीह पर हो गया और उनका देश भी छिन गया।

तात्पर्य यह कि ईसा मसीह अलैहिस्सलाम का बिन बाप पैदा होना एक अंतर लेख निशान के रूप में था। फिर उसी खानदान में से जो कि उसका ही एक भाग था और जिस में आज तक नबी आते रहे थे ख़ुदा ने एक और शाख पैदा कर दी और एक दूसरी बुनियाद बनी इस्माईल में से डाली। यहूद की हुकूमत की तबाही का वर्णन मैंने इसलिए किया है की नबूव्वत और हुकूमत ने उस कौम को दी थी लेकिन फिर मसीह को बिन बाप पैदा करके यह बताया कि तुम्हारे दुराचार, धृष्टताएं, नबियों का झूठलाना और उन से दुश्मनी करना इत्यादि इस स्तर तक पहुंच गया था कि अब तुम इनाम पाने की जगह प्रकोप के भागी होते हो और उस नस्ल से नबूव्वत को समाप्त करने के लिए उनको यह निशान दिया गया कि बनी इसराइल में मसीह का कोई बाप ना हुआ। अर्थात उसको बिन बाप पैदा करके यह बताया कि अब नबूव्वत तुम से गई। (मलफूज़ात जिल्द- 2)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन

पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

अब देखो हज़रत मसीह ने कितनी सफ़ाई से इन्कार कर दिया है। यदि विचार करें तो आप का ऐतराज़ इस ऐतराज़ के आगे कुछ भी चीज़ नहीं क्योंकि आप ने केवल काफ़िरों का इन्कार प्रस्तुत किया और वह भी न सामान्य इन्कार अपितु विशेष निशानों के बारे में, और स्पष्ट है कि दुश्मन का इन्कार पूर्णतया संतोषजनक नहीं होता क्योंकि दुश्मन घटना के विरुद्ध भी कह जाता है परन्तु हज़रत मसीह तो स्वयं अपने मुंह से चमत्कारों के दिखाने से इन्कार कर रहे हैं और चमत्कारों के जारी होने के निषेध को युग के साथ संबंधित कर दिया है और फ़रमाते हैं कि इस युग के लोगों को कोई निशान न दिया जायेगा अत: इस से बढ़कर चमत्कारों के इन्कार का कौन सा स्पष्ट वर्णन हो सकता है और इस ला निषेध से बढ़कर और कौन सा ला निषेध होगा।

फिर दूसरी आयत का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है इसमें भी अगली पिछली आयतों के प्रसंग से बिलकुल अलग कर के उस पर ऐतराज़ कर दिया है परन्तु असल आयत और उससे संबंधित पर दृष्टि डालने से प्रत्येक देखने वाला न्यायवान समझ सकता है कि आयत में एक भी ऐसा शब्द नहीं है जो चमत्कारों के इन्कार को बताता हो अपितु समस्त शब्द साफ़ बता रहे हैं कि चमत्कार अवश्य प्रकटन में आए। अत: वह आयत उसकी अन्य संबंधित आयतों के साथ यह है

وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۞ وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ۞ (बनी इस्राईल - 59,60)

ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि यों तो क़यामत से पहले हर एक बस्ती को हम ने ही तबाह करना है या कठोर अज़ाब उतारना है यही किताब में लिखा जा चुका है। परन्तु इस समय हम कुछ उन पहले प्रकोपी निशानों को (जो अज़ाब के रूप में पहली उम्मतों पर उतर चुके हैं) इस लिए नहीं भेजते कि पहली उम्मत के लोग उस को झुठला चुके हैं। अत: हम ने समूद को बतौर निशान के जो अज़ाब की भूमिका थी ऊंटनी दी जो सत्य को दिखाने वाला निशान था (जिस पर उन्होंने अत्याचार किया अर्थात् वही ऊंटनी जिसकी बहुत अधिक खाने पीने के कारण हिज्र शहर के निवासियों के लिए जो समूद की क़ौम में से थे तालाब इत्यादि का पानी पीने के लिए शेष न रहा था और न उनके पशुओं के लिए कोई चरागाह रही थी और एक बड़े संकट रंज और विपत्ति में गिरफ्तार हो गई थी) और प्रकोपी निशानों के उतारने से हमारा उद्देश्य यही होता है कि लोग उनसे डरें अर्थात् प्रकोपी निशान तो केवल डराने के लिए दिखाए जाते हैं तो ऐसे प्रकोपी निशानों के मांगने से क्या लाभ जो पहली उम्मतों ने देखकर उन्हें झुठला दिया और उनके देखने से कुछ भी भयभीत और हताश न हुए।

यहाँ स्पष्ट हो कि निशान दो प्रकार के होते हैं –

(1) भय और अज़ाब के निशान जिनको प्रकोपी निशान भी कह सकते हैं

(2) ख़ुशख़बरी और सांत्वना के निशान जिनको दया के निशानों का भी नाम दे सकते हैं।

भय के निशान सख़्त काफ़िरों और टेढ़े दिलों, अवज्ञाकारियों बेईमानों तथा फ़िरऔनी स्वभाव वालों के लिए प्रकट किए जाते हैं ताकि वह डरें और ख़ुदा तआला का प्रकोपी और प्रतापी रो'ब उनके दिलों पर छा जाए। और ख़ुशख़बरियों के निशान उन सत्याभिलाषियों, निष्कपट मोमिनों और सच्चाई के तलाश करने वालों के लिए प्रकट होते हैं जो दिल की गरीबी और विनम्रता से पूर्ण विश्वास और ईमान में वृद्धि के प्रत्याशी हैं और ख़ुशख़बरी के निशानों से डराना और धमकाना अभीष्ट नहीं होता अपितु अपने उन आज्ञाकारियों बन्दों को संतुष्ट करना और ईमान और विश्वास की परिस्थितियों में उन्नति देना और उनके व्याकुल सीने पर प्रेम और तसल्ली का हाथ रखना अभीष्ट होता है। तो मोमिन पवित्र क़ुर्आन के माध्यम से सदैव ख़ुशख़बरी के निशान पाता रहता है और ईमान तथा विश्वास में उन्नति करता चला जाता है। ख़ुशख़बरी के निशानों से मोमिन को सांत्वना मिलती है और वह व्याकुलता जो स्वाभाविक तौर पर मनुष्य में है जाती रहती है और सांत्वना दिल पर उतरती है मोमिन ख़ुदा तआला की किताब के अनुकरण की बरकत से आयु के अन्तिम दिन तक ख़ुशख़बरी के निशानों को पाता रहता है और सांत्वना तथा आराम प्रदान करने वाले निशान उस पर उतरते रहते हैं ताकि वह विश्वास और मारिफ़त में असीमित उन्नतियाँ करता जाए और अटल विश्वास तक पहुँच जाए तथा ख़ुशख़बरी के निशानों में एक आनन्द यह होता है कि जैसे मोमिन उनके उतरने से विश्वास और आत्मज्ञान और ईमान की शक्ति में उन्नति करता है ऐसा ही वह ख़ुदा तआला की नेमतों और प्रत्यक्ष तथा आन्तरिक प्रतापी और गोपनीय उपकारों के अवलोकन के कारण जो ख़ुशख़बरी के निशानों में भरे हुए होते हैं प्रेम और इश्क में भी दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है। अत: वास्तव में महान और सुदृढ़ प्रभाव, मुबारक और उद्देश्य तक पहुँचाने वाले ख़ुशख़बरी के निशान ही होते हैं जो साधक को पूर्ण आत्मज्ञान और व्यक्तिगत प्रेम के उस पद तक पहुंचा देते हैं जो अल्लाह तआला के वलियों के लिए पदों का अन्त है और पवित्र क़ुर्आन में ख़ुशख़बरी के निशानों का बहुत कुछ वर्णन है यहाँ तक कि उसने उन निशानों को सीमित नहीं रखा अपितु एक अनश्वर वादा दे दिया है कि पवित्र क़ुर्आन के सच्चे अनुयायी उन निशानों को पाते रहेंगे जैसा कि वह फ़रमाता है

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (यूनुस - 65)

अर्थात् ईमानदार लोग सांसारिक जीवन और आखिरत में भी ख़ुशख़बरी के निशान पाते रहेंगे जिनके द्वारा वे संसार और आखिरत में आत्मज्ञान और प्रेम के मैदानों में अपार उन्नतियाँ करते जायेंगे। यह ख़ुदा की बातें हैं जो कभी नहीं टलेंगी और ख़ुशख़बरी के निशानों को पा लेना यही महान सफलता है (अर्थात् यही एक बात है जो प्रेम और आत्मज्ञान के अन्तिम स्थान तक पहुंचा देती है)

(एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब, पृष्ठ 20-24)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

जलसा सालाना क़ादियान

प्रिय पाठको 'जलसा सालाना क़ादियान' जमाअत अहमदिया भारत का एक वार्षिक सम्मेलन है जिसमें दुनिया भर से लोग सम्मिलित होते हैं और अपनी आध्यात्मिकता को बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। यह जलसा कोई सांसारिक सम्मेलन जैसा नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य केवल और केवल आध्यात्मिक है ताकि लोग इस में सम्मिलित होकर धर्म की बातें सुनें और अपने कर्मों का सुधार करें, शुद्ध आध्यात्मिक वातावरण में खुदा से अपने गुनाहों की माफी मांगें, औरअपने अंदर जो कमज़ोरियाँ हैं उन्हें दूर करके खुदा के प्यारे बन जाएं।

इसका आरंभ ऐसे हुआ कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुस्तक "आसमानी फ़ैसला" लिख ली तो आप ने उचित समझा कि उसके प्रकाशन से पहले क़ादियान में एक जलसा आयोजित किया जाए और उसमें जमाअत के लोगों के समक्ष यह पुस्तक पढ़ कर सुनाई जाए। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत के दोस्तों को यह हिदायत फ़रमाई कि 27 दिसंबर 1891 ई० को क़ादियान में आयोजित होने वाले जलसे में उपस्थित हों। अत: इस दिन मस्जिद अक्सा क़ादियान में लोग एकत्र हो गए। नमाज़ ज़ुहर के बाद जलसे की कारवाई आरंभ हुई।

हुज़ूर फरमाते हैं: "इस विनीत की बैअत में प्रवेश करने वाले समस्त नेक लोगों पर स्पष्ट हो कि बैअत करने से उद्देश्य यह है कि ताकि सांसारिक मोह-माया तथा प्रेम कम हो, और अपने मौला करीम और रसूले मकबूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रेम हृदयों में भर जाए। और ऐसी अवस्था उत्पन्न हो जाए जिससे परलोक की यात्रा बुरी न लगे। परन्तु इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संगत में रहना और अपनी आयु का एक भाग इस मार्ग में व्यतीत करना आवश्यक है ताकि यदि ख़ुदा तआला चाहे तो किसी स्पष्ट दलील को देख कर कमज़ोरी और आलस्य दूर हो और पूर्ण विश्वास पैदा हो कर रुचि और शौक़ तथा प्रेम का जोश उत्पन्न हो जाए, अत: इस बात के लिए सदैव चिंता रखनी चाहिए कि ख़ुदा तआला यह सामर्थ्य प्रदान करे और जब तक यह सामर्थ्य प्राप्त न हो कभी कभी अवश्य मिलना चाहिए। क्योंकि बैअत के सिलसिले में सम्मिलित होकर फिर मिलने की परवाह न रखना ऐसी बैअत अत्यंत बेबर्कत और केवल एक रस्म के तौर पर होगी। और क्योंकि प्रत्येक के लिए फितरती कमज़ोरी के कारण अथवा सामर्थ्य की कमी अथवा दूरी के कारण यह संभव नहीं हो सकता कि वह संगत में आ कर रहे या साल में कई बार कठिनाइयां उठा कर मिलने के लिए आए। क्योंकि अधिकतर दिलों में अभी ऐसा मुहब्बत का जोश नहीं कि मुलाक़ात के लिए बड़ी-बड़ी कठिनाइयों और बड़ी-बड़ी हानियों को उठाएं। अत: उचित ज्ञात होता है कि साल में तीन दिन ऐसे जलसे के लिए निर्धारित किए जाएँ जिसमें समस्त मुख़लिसीन यदि ख़ुदा चाहे बशर्ते सेहत व फुर्सत और बिना किसी रुकावट के निर्धारित तारीखों पर उपस्थित हो सकें।" (मजमूआ इश्तेहारात जिल्द प्रथम पृष्ठ 302)

इस जलसे का आयोजन चूंकि क़ादियान में होता है और क़ादियान खुदा के मसीह का जन्म स्थान है, यहीं पर वह घर है जहां आप रहते रहे, यहीं वह गालियां हैं जिनमें आप चलते फिरते रहे और यहीं आपका मज़ार भी मौजूद है। सभी भाइयों को चाहिए कि इस पवित्र स्थल पर आकर अध्यात्म लाभ उठाएं।

फ़रहत अहमद आचार्य

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना
जोश-ए-सदाक़त
(सच्चाई का जोश)

क्यों नहीं लोगों तुम्हें हक़[7] का ख़्याल
दिल में आता है मेरे सौ सौ[8] उबाल
आँख तर[9] है दिल में मेरे दर्द है
क्यों दिलों पर इस क़दर गर्द[10] है
दिल हुआ जाता है हर दम बे क़रार
किस बयाबाँ[11] में निकालूँ ये ग़ुबार
हो गए हम दर्द से ज़ेरो ज़बर[12]
मर गए हम पर नहीं तुम को ख़बर
आसमाँ पर ग़ाफ़िलो इक जोश है
कुछ तो देखो गर तुम्हें कुछ होश है
हो गया दीं कुफ़्र से हमलों से चूर
चुप रहे कब तक ख़ुदा वन्दे ग़यूर[13]
इस सदी का बीसवाँ अब साल है
शिर्को बिदअत से जहाँ पामाल है
बदगुमाँ क्यों हो ख़ुदा कुछ याद है
इफतरा की कब तलक बुनियाद है
वो ख़ुदा मेरा जो है जौहर शनास[14]
इक जहाँ को ला रहा है मेरे पास
लानती होता है मर्दे मुफ़तरी[15]
लानती को कब मिले ये सरवरी।।

(एजाज़े अहमदी, पृ. 32, प्रकाशन 1902 ई. /
रूहानी ख़ज़ायन भाग 19, पृ. 142)

---

7. सच्चाई के साथ देने का अहसास। 8. जोश उठना। 9. रोना। 10. मिट्टी। 11. जंगल। 12. तहस-नहस। 13. ख़ुदा तआला का गुणवाचक नाम। 14. गुणों का अन्दाज़ा लगाने वाला। 15. झूठा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 25.11.2022 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

अमरीका के दौरे 2022 के सफलता पूर्वक पूरा होने का विवरण, मेहमानों की अभिव्यक्तियाँ तथा अल्लाह तआला की कृपाओं का वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:-

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला के जीवन परिचय के विभिन्न वृत्तांत बयान हो रहे थे। इसके अंतर्गत उनकी जन सेवा तथा निर्धनों को खाना खिलाने के बारे में मिलता है कि इस्लाम क़बूल करने से पहले भी हज़रत अबू बकर रज़ी. क़ुरैश क़बीले के अति उत्तम लोगों में गिने जाते थे। लोगों को जो भी कठिनाईयाँ पेश आतीं थीं, लोग उनसे सहायता लिया करते थे। मक्का में बड़ी बड़ी दावतें तथा मेहमानों की सेवा करते किया करते थे। इस्लाम से पहले के दौर में क़ुरैश के प्रतिष्ठित तथा उत्तम लोगों में माने जाते थे। लोग अपनी समस्याएँ तथा मामले लेकर उनके पास आया करते थे। हज़रत अबू बकर रज़ी. निर्धनों तथा दुर्बलों के लिए अति दयालु थे, सर्दियों में कम्बल ख़रीद कर दुर्बल लोगों में बांटा करते थे।

एक रिवायत है कि ख़िलाफ़त के पद पर सुशोभित होने से पहले आप रज़ी. एक लावारिस परिवार की बकरियों का दूध निकाला करते थे और ख़लीफ़ः बनने के बाद भी छः महीने तक पहले की भांति यही सेवा करते रहे जबतक कि आप रज़ी. ने मदीने में आकर रहना आरम्भ न कर दिया। हज़रत उमर रज़ी. मदीने के किनारे रहने वाली एक बूढ़ी तथा नेत्र-हीन महिला का ध्यान रखा करते थे। आप रज़ी. उसके लिए पानी लाते तथा उसके काम काज करते थे, एक बार जब आप रज़ी. उसके घर गए तो पता चला कि कोई व्यक्ति आप रज़ी. से पहले ही उसके काम कर गया। अगली बार आप रज़ी. उसके घर जल्दी गए और छुप कर बैठ गए तो देखा कि यह आप रज़ी. हैं जो उस बुढ़िया के घर आते थे और उस समय हज़रत अबू बकर रज़ी. ख़लीफ़ः थे। इस पर हज़रत उमर रज़ी. ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम, यह आप रज़ी. ही हो सकते थे, अर्थात इस नेकी के काम में मुझसे बढ़ने वाले आप रज़ी. ही हो सकते थे।

एक रिवायत है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ी. ने बताया कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसके पास दो लोगों का खाना हो वह तीसरे को ले जाए तथा जिसके पास चार आदमियों का खाना हो वह पाँचवें को ले जाए। हज़रत अबू बकर रज़ी. तीन आदमियों को ले आए और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दस को ले गए। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने मेहमानों को जो खाना पेश किया वह मेहमानों के खाने के बाद भी इतना बच रहा कि पहले से भी तीन गुना अधिक लगता था। हज़रत अबू बकर रज़ी. वह खाना नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर ले गए तथा वहाँ भी विशिष्ट लोगों की संख्या ने वह खाना खाया। यह बरकत अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर रज़ी. के खाने में डाली।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. के बेटे अब्दुर्रहमान रज़ी. भी ख़िलाफ़त के पात्र थे। लोगों ने कहा कि उनका स्वभाव हज़रत उमर रज़ी. से विनम्र है तथा योग्यता भी उनसे कम नहीं। उनको आप रज़ी. के बाद ख़लीफ़: बनना चाहिए। परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत उमर रज़ी. को ही ख़िलाफ़त के लिए चुना, बावजूद इसके कि हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उमर रज़ी. के स्वभाव में अन्तर था। अत: हज़रत अबू बकर रज़ी. ने ख़िलाफ़त से कोई व्यक्तिगत लाभ प्राप्त नहीं किया अपितु आप रज़ी. समाज सेवा को ही बड़ाई मानते थे। सूफियों की एक रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ी. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. के एक सेवक से पूछा कि कौन कौन से काम तेरा स्वामी किया करता था ताकि मैं भी वह काम करूँ। सेवक ने बताया कि हज़रत अबू बकर रज़ी. रोज़ाना रोटी लेकर अमुक दिशा की ओर जाया करते थे। अतएव हज़रत उमर रज़ी. उस सेवक के साथ उसी ओर खाना लेकर चले गए, तो क्या देखते हैं कि एक गुफा में एक अपंग अंधा जिसके हाथ पाँव न थे, बैठा हुआ था। हज़रत उमर रज़ी. ने उसके मुंह में एक निवाला डाला तो वह रो पड़ा और कहने लगा कि अल्लाह तआला हज़रत अबू बकर रज़ी. पर दया करे, वे भी क्या आदमी थे। हज़रत उमर रज़ी. ने पूछा कि तुम्हें कैसे पता चला कि हज़रत अबू बकर रज़ी. का निधन हो गया है? उसने कहा कि मेरे मुंह में दांत नहीं हैं, इस लिए अबू बकर रज़ी. निवाले को चबा कर मेरे मुंह में डाला करते थे, आज निवाला कठोर है इस लिए मैंने समझा कि मेरे मुंह में निवाला डालने वाला कोई और व्यक्ति है तथा अबू बकर रज़ी. कभी नागा नहीं किया करते थे,अब जो ना$गा हुआ तो निश्चित ही अबू बकर रज़ी. इस दुनिया में नहीं है। अतएव वह कौनसी चीज़ है हो बादशाहत से हज़रत अबू बकर रज़ी. ने पाई है? एक विशिष्टता थी जो उन्हें मानव सेवा से मिली।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तथा उसके बन्दों के हक़, दो भाग शरीअत के हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर देखो कि कितनी लम्बी आयु समाज की सेवा में व्यतीत की। हज़रत अली रज़ी. की हालत देखो कि इतने पेवन्द लगाए कि जगह न रही। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने एक बुढियों को हलवा खिलाना अपना नियम बना रखा था, सोचो कि कैसा उत्तम प्रबन्ध था। जब हज़रत अबू बकर रज़ी. का निधन हो गया तो उस बुढ़िया ने कहा कि आज अबू बकर रज़ी. का निधन हो गया। पड़ौसियों ने पूछा कि तुझे इलहाम हुआ है। उसने कहा- नहीं बल्कि आज अबू बकर रज़ी.

हलवा लेकर नहीं आया, इसलिए मुझे पता चल गया कि उसकी मृत्यु हो गई। अर्थात जीवित रहते सम्भव न था कि किसी अवस्था में हलवा न पहुंचे। देखो कितनी बड़ी सेवा थी, ऐसा ही सबको चाहिए कि समाज सेवा करे।

हज़रत अबू बकर रज़ी. शौर्य एवं वीरता की प्रतिमा थे। बड़ी बड़ी आशंका को इस्लाम के लिए अथवा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्नेह के कारण कुछ न समझते थे। मक्का के जीवन में जब उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात के लिए कठिनाई अथवा आशंका का कोई अवसर देखा तो आप स. की सुरक्षा के लिए दीवार बन कर सामने खड़े हो जाते। अबी तालिब की घाटी में तीन साल तक बन्दी बने रहने का ज़माना आया तो दृढ़ संकल्प तथा बहादुरी के साथ वहाँ उपस्थित रहे। हिजरत के समय भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संगत एवं साथ का सौभाग्य मिला, यद्यपि जान का जोखिम था। जितने भी युद्ध हुए, न केवल आप रज़ी. उनमें शामिल हुए बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुरक्षा का कत्र्तव्य भी निर्वाह किया।

हज़रत अली रज़ी. ने एक बार लोगों से पूछा कि सबसे अधिक दलेर कौन है? तो लोगों ने कहा कि आप रज़ी. हैं, किन्तु हज़रत अली रज़ी. ने फ़रमाया कि सबसे बहादुर अबू बकर रज़ी. हैं, क्यूँकि बदर के युद्ध में अबू बकर रज़ी. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तलवार सूंते खड़े रहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कोई मुशरिक पहुंचने से पहले आप रज़ी. से मुक़ाबला करेगा। इसी प्रकार ओहद की लड़ाई में जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत की झूठी ख़बर फैली तो सबसे पहले हज़रत अबू बकर रज़ी. भीड़ को चीरते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे। कहा जाता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास उस समय केवल ग्यारह सहाबा किराम मौजूद थे जिनमें से हज़रत अबू बकर रज़ी. का नाम भी आता है। ओहद के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहरे में घाटी पर मौजूद कुछ जान की बाज़ी लगाने वालों में हज़रत अबू बकर रज़ी. भी एक थे। खंदक़ वाले युद्ध में हज़रत अबू बकर रज़ी. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ साथ थे। हुदैबिय: की सन्धि के अवसर पर जान निछावर करने के लिए बैअत करने वालों में तो आप रज़ी. थे ही परन्तु हुदैबिय: की सन्धि में भी जब समझौता लिखा गया तो जिस ईमान के साहस एवं दृढ़ संकल्प तथा विवेक व आज्ञा पालन व इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नमूना हज़रत अबू बकर रज़ी. ने पेश किया, हज़रत उमर रज़ी. अपने बाद के जीवन में उसको नहीं भूले।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान फ़रमाते हैं कि एक बार काफिरों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गले में पटका डालकर ज़ोर से खींचना शुरु किया। हज़रत अबू बकर रज़ी. को इस बात का पता चला तो दौड़े हुए आए तथा काफिरों को हटा कर फ़रमाया कि ऐ लोगा! तुम्हें ख़ुदा का भय अनुभव नहीं होता कि तुम एक व्यक्ति को केवल इस कारण से मारते पीटते हो कि वह कहता है कि अल्लाह मेरा रब है, वह तुमसे कोई सम्पत्ति नहीं मांगता तो फिर क्यूँ उसे मारते हो। सहाबी रज़ी. कहते हैं कि हम अपने ज़माने में सबसे बहादुर हज़रत अबू बकर रज़ी. को समझते थे, क्यूँकि दुश्मन जानता था कि यदि मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मार लिया तो इस्लाम नष्ट हो जाएगा और हमने देखा कि हज़रत अबू बकर रज़ी. सदैव रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास खड़े होते थे ताकि जो कोई आप स. पर हमला करे तो उसके सामने अपना सीना कर दें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि जिस प्रकार जिब्रईल बैतुल मुक़द्दस की यात्रा में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे, उसी तरह हिजरत में अबू बकर रज़ी. आप स. के साथ थे, जो मानो उसी तरह आप स. के आधीन थे जिस तरह जिब्रईल ख़ुदा तआला के आदेशों का पालन करता है। जिब्रईल का अर्थ ख़ुदा तआला का पहलवान होता है। हज़रत अबू बकर रज़ी. भी अल्लाह तआला के विशेश बन्दे थे तथा दीन के लिए एक निडर पहलवान का स्तर रखते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने निधन से पूर्व हज़रत आयशा रज़ी. से फ़रमाया कि मेरे दिल में बार बार यह इच्छा जागती है कि मैं लोगों से कह दूँ कि वह मेरे बाद अबू बकर रज़ी. को ख़लीफ़: बना दें, परन्तु फिर रुक जाता हूँ क्यूँकि मेरा दिल जानता है कि मेरे देहान्त के बाद ख़ुदा तआला तथा उसके मोमिन बन्दे अबू बकर रज़ी. के अतिरिक्त किसी अन्य को ख़लीफ़: नहीं बनाएँगे, अत: ऐसा ही हुआ।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने अपने जीवन में जो कार्य किया वह उन्हीं को शोभा देता था, कोई अन्य व्यक्ति वह काम नहीं कर सकता था, यद्यपि आप रज़ी. अत्यंत विनम्र हृदय वाले व्यक्ति थे किन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद जब कुछ लोगों ने ज़कात देने से इंकार कर दिया, लगभग पूरा अरब देश इस्लाम से विमुख हो गया तथा ऐसे कठिन समय पर हज़रत उमर रज़ी. सहित अन्य सहाबियों रज़ी. ने यह भी कहा कि इनके साथ नर्मी की जाए। पहले काफिरों को आधीन कर लें फिर इनका सुधार कर लेंगे, परन्तु अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि इब्ने क़हाफ़ा का क्या अधिकार है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिए हुए आदेश को बदले, मैं तो उनसे उस समय तक लड़ूंगा जब तक ये लोग पूरी तरह ज़कात न दें। उस अवसर पर सहाबियों को पता चला कि ख़ुदा का बनाया हुआ ख़लीफ़: कितना साहस तथा दलेरी रखता है। अंतत: हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उनको आधीन किया तथा उनसे ज़कात लेकर छोड़ी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि सहाबियों की दशा देखो कि जब परीक्षा की घड़ी आई तो जो कुछ किसी के पास था, अल्लाह की राह में दे दिया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. कम्बल पहन कर आ गए, अर्थात केवल एक कम्बल पहन लिया और सब कुछ ख़ुदा की राह में दे दिया, फिर अल्लाह तआला ने उसका प्रतिफल भी दिया। अर्थात यह है वास्तविक गुण कि भलाई एवं आध्यात्मिक आनन्द से लाभान्वित होने के लिए वही धन काम आ सकता है जो ख़ुदा की राह में ख़र्च किया जाए। हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में फ़रमाया कि शेष इन्शाअल्लाह आगे वर्णन होगा।

किसी जानकारी हेतु टोल फ्री नम्बर अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान- 1800 103 2131

☆ ☆ ☆

क़ुर्आन की विशेषताएं (फ़ज़ाइलुल-क़ुर्आन) भाग-1

भाषण: हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ी०

(क़िस्त-2)

ईसाईयों की धोखा देने वाली चालाकियां

इस के सम्बन्ध में मैंने विस्तृत अनुसंधान किया है जो आज प्रस्तुत करना चाहता था परन्तु अब न समय है और न अवसर क्योंकि बादल घिरे हुए हैं। हां इस के सम्बन्ध में एक लतीफ़ा सुना देता हूँ। वे पृष्ठ जो इस पुस्तक में पुराने क़ुरआन के कह कर प्रकाशित किए हैं, वे अपनी ग़लती आप प्रकट कर रहे हैं, जैसे क़ुरआन में आता है।

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰہِ وَرَسُوْلِہِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الَّذِیْ یُؤْمِنُ بِاللّٰہِ وَ کَلِمٰتِہٖ وَاتَّبِعُوْہُ لَعَلَّکُمْ تَھْتَدُوْنَ

(अल्आराफ आयत-159)

परन्तु जो ईसाईयों का लिखा हुआ क़ुरआन है उस में आता है:

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰہِ وَرَسُوْلِہِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الَّذِیْ یُؤْمِنُ بِاللّٰہِ وَ کَلِمٰتِہٖ وَاتَّبَعَہٗ

कि वह अल्लाह पर ईमान लाता है और उस के कलिमा पर और कलिमा से अभिप्राय "हज़रत ईसा" लेते हैं। भाव यह कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत ईसा के अनुयायी थे।

इस प्रकार की चालें इस में चली गई हैं। परन्तु बावजूद इस प्रकार की कोशिशों के यही बातें उनको झूठा सिद्ध कर रही हैं। प्रथम इस तरह कि ईसाइयों की ओर से जो क़ुरआन प्रस्तुत किया जाता है उस का वही क्रम है जो वर्तमान क़ुरआन का है। इसलिए उनका यह कहना उन्हीं के प्रस्तुत किए गए क़ुरआन से ग़लत सिद्ध हो गया कि हज़रत उसमान रज़ि के समय पवित्र क़ुर्आन के क्रम को बदल दिया था।

फिर उस क़ुरआन में कुछ ऐसे शब्द लिखे हैं जो अरबी के हैं ही नहीं। जैसे एक स्थान पर इलम को ईलम लिखा है। इसी तरह एक जगह ऐसी ग़लती की है जिससे उस चोर का मशहूर क़िस्सा याद आ जाता है जिसके सम्बन्ध में कहते हैं कि वह नया-नया चोर बना था। चोरी करने के बाद जब पुलिस तहक़ीक़ात के लिए आई तो वह ख़ुद भी वहां चला गया। और तहक़ीक़ात में मदद देने लग गया। कहने लगा कि मालूम होता है चोर इधर से आया, यहां से उतरा और फिर इधर गया। पुलिस वालों ने ताड़ लिया कि इस का चोरी में ज़रूर हाथ है। इसलिए उस से सारी बातें पूछने लगे और जिधर वह ले गया उस के साथ चल पड़े। आख़िर एक दरवाज़ा के पास जाकर कहने लगा कि मालूम होता है चोर इस दरवाज़ा से निकला और उसे यहां से ठोकर लगी। इस पर गठड़ी अंदर और मैं बाहर। इस अवसर पर अपने आप उस के मुँह से मैं निकल गया। पुलिस ने फ़ौरन उसे पकड़ लिया। यही हाल यहां हुआ। पवित्र क़ुर्आन में एक आयत है وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْھَا (अत्तौब: आयत 26) अल्लाह तआला ने ऐसे लश्कर उतारे जिन को तुम देख नहीं रहे थे। यहां "हा" की विभक्ति "जुनूद" की ओर जाती है।

परन्तु ईसाइयों के प्रस्तुत किए गए क़ुरआन में कहा गया है कि यहां "जुनदुन" है परन्तु आगे "हा" ही रखा है और विभक्ति को नहीं बदला। अत: इस प्रकार की बहुत सी गवाहियां हैं जिनसे उस के अंदर से ही ग़लतियां मालूम हो जाती हैं। मालूम होता है किसी ने मुसलमानों को धोखा देने के लिए उसे लिखा और उस में ग़लतियां करता गया। अत: وَاِذِ اسۡتَسۡقٰی को ك के साथ लिखा है इसी तरह هُمُ السُّفَهَآءُ को هُمُسُّفَهَآءُ

लिख दिया। इसी तरह और कई शब्द ग़लत लिखे हैं। जैसे اِنَّمَا النَّسِیۡٓءُ को اِنَّمَاالۡ نَاسِیۡ लिखा है। हालाँकि نَاسِی "नासी" इन अर्थों में आता ही नहीं। इस से साफ़ मालूम होता है कि कोई अज्ञान ईसाई क़ुरआन की नक़ल करने बैठा जिसे अरबी न आती थी और इस प्रकार की ग़लतियां करता गया।

अब मैं पवित्र क़ुर्आन के सम्बन्ध में यूरोपियन मुस्तश्रिक़ीन के कुछ विभिन्न आरोपों का वर्णन करता हूँ।

पवित्र क़ुर्आन का अवतरण छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में

यूरोप के मुस्तश्रिक़ कहते हैं कि यह जो कहा जाता है कि पवित्र क़ुर्आन टुकड़े-टुकड़े अवतरित हुआ, इस से मालूम होता है कि यह ख़ुदा की वाणी नहीं। ख़ुदा को क्या आवश्यकता थी कि टुकड़े-टुकड़े कर के अवतरित करता उसे तो अगला पिछला सब हाल मालूम होता है। चूँकि बंदे को ही अगले हालात का ज्ञान नहीं होता इसलिए वह अगली बातों के सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकता। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो हालात सम्मुख आते-जाते थे उनके सम्बन्ध में क़ुरआन में वर्णन कर देते। अत: यह उनका अपना कलाम है, ख़ुदा का नहीं।

पवित्र क़ुर्आन ने ख़ुद इस प्रश्न को लिया है। ख़ुदा तआला फ़रमाता है

وَقَالَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا لَوۡلَا نُزِّلَ عَلَیۡہِ الۡقُرۡاٰنُ جُمۡلَۃً وَّاحِدَۃً

(अल्फ़ुर्क़ान आयत 33) अर्थात कुफ़्फ़ार कहते हैं कि क़ुरआन उस रसूल पर एक ही बार क्यों अवतरित नहीं किया गया। इस से साफ़ मालूम होता है कि जो प्रश्न ईसाईयों को अब सूझा है यही प्रश्न रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय कुफ़्फ़ार ने भी किया था कि एक ही बार क़ुरआन क्यों न उतरा। इस का उत्तर ख़ुदा तआला ने यह दिया कि "कज़ालिक" कि इसी तरह उतरना चाहिए था जिस तरह उतारा गया है। لِنُثَبِّتَ بِہٖ فُؤَادَکَ (अल्फ़ुर्क़ान आयत 33) अर्थात इस में हिक्मत यह है कि इस के द्वारा हम तेरे दिल को मज़बूत करना चाहते हैं। मानो क़ुरआन का टुकड़े टुकड़े अवतरित होना ख़ुदा तआला की कमज़ोरी की कारण नहीं बल्कि इस से उस की बुलन्द शान का इज़हार होता है। अब प्रश्न यह है कि धीरे-धीरे क़ुरआन के अवतरित होने से दिल की मज़बूती किस तरह होती है इस के सम्बन्ध में मैं कुछ बातें बता देता हूँ।

(1) यदि एक ही बार क़ुरआन अवतरित हो जाने पर उस से इस्तिदलाल करते रहते तो दिल को ऐसी दृढ़ता प्राप्त नहीं हो सकती थी जैसी किसी विषय के सम्बन्ध में तुरन्त कलामे इलाही के उतरने से हो सकती है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि को जो मज़ा इस में आता होगा कि आप कोई काम करते और इस के सम्बन्ध में वह्यी हो जाती और ख़ुदा तआला अपनी मर्ज़ी और इच्छा का इज़हार कर देता,

वह मज़ा हमें इज्तिहाद से कहाँ प्राप्त हो सकता है। इसी तरह जब कोई घटना घटती, आप पर उस के सम्बन्ध में कलामे इलाही अवतरित हो जाता और इस तरह मालूम हो जाता कि इस कलाम का यह अभिप्राय है। यदि आप इज्तिहाद कर के आयतों को किसी बात पर लगाते तो वह आन्नद न आता जो इस अवस्था में था।

(2) पवित्र क़ुर्आन لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ (अनुवाद) का चरित्रार्थ इस तरह है कि जो पुस्तक सारी दुनिया के लिए हो उसे सुरक्षित रखना भी ज़रूरी था। यदि क़ुरआन एक ही बार सारे का सारा उतरता तो उसे वही व्यक्ति हिफ़्ज़ कर सकता था जो उस के लिए अपनी सारी ज़िन्दगी वक़्फ़ (समर्पित) कर देता। परन्तु धीरे-धीरे उतरने से बहुत लोग इस को याद करने के लिए तैयार हो गए और अपने दूसरे कारोबार के साथ पवित्र क़ुर्आन भी हिफ़्ज़ करते गए। इस तरह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दिल इस बात पर मज़बूती से क़ायम हो गया कि यह पुस्तक नष्ट नहीं होगी बल्कि महफ़ूज़ रहेगी। यही कारण था कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय बहुत संख्या में ऐसे लोग थे जिन्हें पवित्र क़ुर्आन हिफ़्ज़ (कंठ) था परन्तु अब इस तुलना में बहुत कम होते हैं। इसलिए कि थोड़ा थोड़ा अवतरित होने के कारण बहुत लोग साथ के साथ याद करते जाते थे।

(3) तीसरी हिक्मत थोड़ा-थोड़ा अवतरित होने में यह है कि एक बार सारा क़ुरआन अवतरित होने के कारण लोगों के दिलों में मजबूती से बैठ न सकता था। अब एक हिंदू जब मुसलमान होता है तो उसे इस्लामी आदेशों का अनुकरण करने वाले मुसलमान नज़र आते हैं। इसलिए वह घबराता नहीं और उन आदेशों का अनुकरण करना बोझ नहीं समझता। परन्तु यदि किसी को हम एक पुस्तक लिख कर दे दें कि इस का अनुकरण करो और कोई नमूना मौजूद न हो तो लोग सौ साल में भी इस पर अनुकरण करना न सीख सकें। अतः पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए ज़रूरी था कि उसे धीरे-धीरे अवतरित किया जाता। एक हुक्म का अनुकरण करना जब लोग सीख जाते तो दूसरा अवतरित होता। फिर तीसरा। और इस तरह सारे आदेशों पर अनुकरण कराया जाता।

(4) यदि एक ही समय क़ुरआन अवतरित होता तो क्रम तो वही रखना पड़ता जो अब है परन्तु यह क्रम उस समय रखा जाना ख़तरनाक होता। जिस तरह अब हमारे लिए वह क्रम ख़तरनाक है जिसके अनुसार क़ुरआन अवतरित हुआ था। यदि नमाज़ और रोज़ों इत्यादि के आदेश शुरू में होते और नबुव्वत सिद्ध न हो चुकी होती, तो वे समझ में ही न आ सकते थे। अतः पहले नबुव्वत को सिद्ध करने की आवश्यकता थी और यह बात प्रमाण तक पहुंचानी चाहिए थी कि यह सच्चा नबी है। इस के बाद अनुकरण की ओर बुलाने का अवसर था जिसके लिए नियम सिखाए जाते परन्तु अब यह ज़रूरी नहीं। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई को मानने वाली एक जमाअत मौजूद है। अब जो शख़्स इस्लाम में दाख़िल होता है वह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सत्यता और इस्लाम की विशेषताओं से परिचित हो कर आता है। अतः उस के लिए क़ुरआन के इसी क्रम की आवश्यकता है जो अब है परन्तु क़ुरआन के एक ही बार इकट्ठा अवतरित होने से ये दोष आता।

(5) यदि एक ही बार सारा क़ुरआन अवतरित होता तो एक हिस्सा में दूसरे हिस्सा की ओर इशारा नहीं हो सकता था। जैसे पवित्र क़ुर्आन में यह भविष्यवाणी थी कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दुश्मनों के घेरे से निकाल कर सही सलामत ले जाऐंगे। यदि एक ही बार सारा क़ुरआन अवतरित हो जाता तो जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मदीना ले जाया गया उस वक़्त यह न कहा जा सकता कि देखो उसे हम दुश्मनों के घेरे से बचाकर ले आए हैं। यह उसी अवस्था में कहा जा सकता था कि पहले एक हिस्सा अवतरित होता जिसमें रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सही सलामत ले जाने की भविष्यवाणी होती। फिर जब यह भविष्यवाणी पूरी हो जाती उस समय वह हिस्सा उतरता जिसमें उस के पूरा होने के सम्बन्ध में इशारा होता।

(6) मेरे निकट एक और प्रमुख बात यह है कि पवित्र क़ुर्आन के सम्बन्ध में यह एतराज़ किया जाता था कि किसी और ने बना कर दिया है। अत: पवित्र क़ुर्आन में इस आरोप का वर्णन भी आता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ٭افْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ

(अल्फ़ुर्क़ान आयत 5) अर्थात काफ़िर कहते हैं कि यह तो सिर्फ एक झूठ है जो उसने बना लिया है। और इस के बनाने में एक और क़ौम ने उस की मदद की है। यदि क़ुरआन इकट्ठा मिलता तो विरोधी यह कह सकते थे कि किसी ने बना कर यह पुस्तक दे दी है। अब कुछ हिस्सा मक्का में अवतरित हुआ कुछ मदीना में। मक्का वाले यदि कहें कि कोई बना कर देता है तो मदीना में कौन बना कर देता था।? फिर क़ुरआन मज्लिस में भी अवतरित होता, उस वक़्त कौन सिखाता था। फिर क़ुरआन सफ़र में भी अवतरित होता। ऐसा कौन शख़्स था जो हर लड़ाई में शामिल हुआ, कोई भी नहीं। अत: क़ुरआन सफ़र और निवास में, रात और दिन में, मक्का और मदीना में, मज्लिस और एकान्त में अवतरित हुआ और इस तरह आरोप लगाने वालों का जवाब हो गया कि क़ुरआन कोई और इन्सान बना कर आपको नहीं देता था। वर्ना यदि इकट्ठे पुस्तक अवतरित होती तो कहा जाता कि कोई व्यक्ति पुस्तक बना कर दे गया जिसे सुना दिया जाता है परन्तु अब जब कि अवसर और स्थान के अनुसार आयात उतरती रहीं तो कोई नहीं कह सकता था कि प्रत्येक अवसर पर कोई बना कर दे देता है। अत: क़ुरआन का टुकड़े टुकड़े हो कर उतरना لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ का सबूत है।

क़ुरआन के इकट्ठा करने पर आरोप

एक आरोप क़ुरआन के इकट्ठा करने के सम्बन्ध में लगाया जाता है। वे लोग जो यह कहते हैं कि क़ुरआन अपने मूल रूप में महफ़ूज़ नहीं वे अपने इस दावा के सबूत में ये बात पेश करते हैं कि

(1) मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जितने काम होते थे और जिस तरह वह लड़ाईयों और उपद्रवों में घिरे हुए थे ऐसी अवस्था में उन्हें क़ुरआन सही तौर पर कहाँ याद रह सकता था

(2) कहा जाता है कि अरबों का हाफ़िज़ा बहुत अच्छा था परन्तु यह ग़लत है। सही बात यह है कि उनका हाफ़िज़ा अच्छा नहीं होता था जो इस से ज़ाहिर है कि उनकी उन नज़्मों में मतभेद है जो पहले शायरों की हैं

कोई किसी तरह वर्णन करता है और कोई किसी तरह। इस से मालूम हुआ कि अरबों के हाफ़िज़े अच्छे न थे वर्ना मतभेद क्यों होता।

(3) क़ुरआन रसूल के ज़माना में पूरा नहीं लिखा गया। यदि पूरा लिखा जाता तो हाफ़िज़ों के मारे जाने पर क़ुरआन के नष्ट हो जाने का ख़तरा क्यों ज़ाहिर किया जाता।

(4) क़ुरआन में आता है:- اَلَّذِيۡنَ جَعَلُوا الۡقُرۡاٰنَ عِضِيۡنَ (सूरह अल्हिज्र 92) अर्थात वे लोग ऐसे हैं जिन्होंने क़ुरआन को टुकड़े टुकड़े कर लिया। कहते हैं इस से मालूम हुआ कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ही क़ुरआन को टुकड़े टुकड़े करने वाले पैदा हो गए थे।

(5) रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चूँकि ख़ुद पढ़े लिखे न थे इसलिए उन्होंने क़ुरआन लिखने के लिए कातिब (लिपिक) रखे हुए थे और वे जो चाहते लिख देते।

(6) लिखा है कि हज़रत उस्मान रज़ि के ज़माना में क़ुर्आन के पढ़ने में बड़ा मतभेद हो गया था। इस से मालूम हुआ कि मुसलमानों में क़ुरआन के सम्बन्ध में मतभेद मौजूद था।

(7) हज़रत उस्मान रज़ि ने हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो के वक़्त के क़ुरआन की जितनी प्रतियां थीं वह जलवा दी थीं। इस से पता लगता है कि उनमें मतभेद था उस क़ुरआन से जो उस्मान रज़ि ने लिखवाया। यदि मतभेद नहीं था तो उन को क्यों जलवाया गया।

(8) पवित्र क़ुर्आन की असलीयत पर सिर्फ ज़ैद गवाह है। परन्तु उस का तो फ़र्ज़ था कि क़ुरआन लिखे। इस पर भरोसा किस तरह किया जा सकता है।

(9) यदि हज़रत अबू बकर रज़ि के वक़्त के क़ुरआन की प्रति दुरुस्त थी तो फिर हज़रत उस्मान रज़ि के ज़माना में दोबारा लिखवाने की क्या आवश्यकता थी। यह सबूत है इस बात का कि हज़रत अबू बकर रज़ि के ज़माना की कापियों को ग़लत समझा गया।

(10) हज़रत उस्मान रज़ि पर आरोप लगाया गया है कि जब वह ख़लीफ़ा हुए तो बहुत से क़ुरआन थे। परन्तु जब उनका देहान्त हुआ तो पीछे सिर्फ एक क़ुरआन छोड़ा। इस से मालूम हुआ कि मतभेद वाले क़ुरआनों को जला दिया गया था।

विरोधियों के आरोपों के उत्तर

अब मैं इन आरोपों का उत्तर देता हूँ

पहला आरोप यह किया जाता है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इतने कामों और उपद्रवों में पवित्र क़ुर्आन याद किस तरह रह सकता था।? यह ऐसा प्रश्न है कि इस का एक ही उत्तर हो सकता है और वह यह कि एक घटना को किस तरह झुठलाया जा सकता है। जब हक़ीक़त यह है कि पवित्र क़ुर्आन आपको याद रहा और दिन रात नमाज़ों में सुनाया जाता रहा तो इस का इन्कार किस तरह किया जा सकता है। मुझे याद है एक बार मेरे सामने प्रोफ़ैसर मार्गोलीथि ने यह आरोप लगाया कि इतना बड़ा क़ुरआन किस तरह याद रह गया।? मैंने कहा; मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तो क़ुरआन उतरा था और आप के

सपुर्द सारी दुनिया की इस्लाह का काम किया गया था आप उसे क्यों याद न रखते? मेरे एक लड़के ने ग्यारह साल की उम्र में क़ुरआन याद कर लिया है। और लाखों इन्सान मौजूद हैं जिन्हें सारे का सारा क़ुरआन याद है। जब इतने लोग उसे याद कर सकते हैं तो क्या वही नहीं कर सकता था जिस पर क़ुरआन अवतरित हुआ था।?

दूसरा आरोप यह है कि अरब के लोगों का हाफ़िज़ा (स्मरण शक्ति) अच्छा ना था, क्योंकि वे पुरानी नज़मों में मतभेद करते हैं। इस के सम्बन्ध में प्रथम तो मैं कहता हूँ कि यह शुतुरमुर्ग वाला उदाहरण है। एक ओर तो कहा जाता है कि अरबों को पुराने क़सीदे याद होते थे जिनमें मतभेद होता था। और दूसरी ओर मार्गोलीथि कहता है कि पुराने ज़माना में क़सीदे थे ही नहीं यूँही बना कर पहले लोगों की ओर सम्बद्ध कर दिए गए हैं। मानो जिस पहलू से इस्लाम पर आरोप लगाना चाहा, वही सामने रख लिया। असल बात यह है कि अरबों के ऐसे हाफ़िज़े होते थे कि मशहूर है एक बादशाह ने ऐलान किया कि जिस शायर को एक लाख शेअर याद न हों वह मेरे पास ना आए। इस पर एक शायर आया और उसने आकर कहा, मैं बादशाह से मिलने के लिए आया हूँ। उसे बताया गया कि बादशाह से मिलने के लिए एक लाख शेअर याद होने ज़रूरी हैं। उसने कहा, बादशाह से जाकर कह दो कि वह एक लाख शेअर इस्लामी ज़माना का सुनना चाहता है या ज़माना जाहिलीयत के, औरतों के सुनना चाहता है या मर्दों के? मैं सब के अशआर सुनाने के लिए तैयार हूँ। यह सुन कर बादशाह शीघ्र बाहर आ गया और आकर कहा। क्या आप अमुक़ शायर हैं? उसने कहा। हाँ मैं वही हूँ। बादशाह ने कहा, इसी लिए मैंने यह ऐलान किया था कि आप मेरे पास आते नहीं थे। मैंने ख़्याल किया कि शायद इस ऐलान पर जोश के कारण आप आ जाऐं। अत: यह कहना ग़लत है कि अरबों के हाफ़िज़े अच्छे न थे। रही ये बात कि शेरों में मतभेद है। इस के सम्बन्ध में याद रखना चाहिए कि वे लोग जो शेअर याद रखते थे वे उन्हें इल्हामी पुस्तक के शेअर समझ कर नहीं याद करते थे बल्कि उनका अर्थ धारण कर लेते थे परन्तु क़ुरआन को तो ख़ुदा का कलाम समझ कर याद करते थे। इस कारण से इस का एक शब्द भी आगे पीछे न करते थे। फिर जो शेअर वे याद करते थे वे उस्तादों से पढ़ कर याद न करते थे बल्कि जिससे सुनते याद कर लेते और हर व्यक्ति इस योग्य नहीं होता कि सही शब्द ही याद कराए। परन्तु इस्लामी तारीख़ से मालूम होता है कि क़ुरआन लिखने के सम्बन्ध में और क़ुरआन याद करने के सम्बन्ध में ख़ास नियम निर्धारित थे और क़ुरआन याद कराने के लिए चार आदमी निर्धारित थे। और इस में इतनी सावधानी की जाती थी कि एक बार नमाज़ में हज़रत अली ने पढ़ने वाले को लुक़्मा दे दिया। तो उन्हें मना किया गया और कहा गया कि आप इस काम के लिए निर्धारित नहीं। अत: पवित्र क़ुर्आन के बारे में इतनी एहतियात की गई थी कि चार आदमी इस काम के लिए निर्धारित थे हालाँकि क़ुरआन जानने वाले हज़ारों थे। इस के मुक़ाबला में शायरों की ओर से कौन से लोग निर्धारित थे, जो शेअर याद कराते थे, इमरा-उलकेस ने किसे निर्धारित किया था कि इस के अशआर लोगों को याद कराया करे। परन्तु क़ुरआन याद कराने के सम्बन्ध में तो उस्ताद के बाद उस्ताद वाली बात चली आ रही है।

तीसरा एक आरोप यह लगाया जाता है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना

में पूरा क़ुरआन न लिखा गया था। इस का उत्तर यह है कि यह बात ठीक नहीं है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में अवश्य सारा क़ुरआन लिखा गया। जैसा कि हज़रत उस्मान रज़ि की रिवायत है कि जब कोई हिस्सा अवतरित होता तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लिखने वालों को बुलाते और फ़रमाते उसे अमुक़ जगह दाख़िल करो। जब यह तारीख़ी सबूत मौजूद है तो फिर यह कहना कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त पूरा न लिखा गया था, बेवक़ूफ़ी है। रहा यह प्रश्न कि फिर हज़रत अबू बकर रज़ि के ज़माना में क्यों लिखा गया? उस का जवाब यह है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में क़ुरआन इस तरह एक जिल्द में न था जिस तरह अब है। हज़रत उमर रज़ि को यह विचार पैदा हुआ कि लोग ये न समझें कि क़ुरआन महफ़ूज़ नहीं। इसलिए उन्होंने इस बारे में हज़रत अबू बकर रजि से जो शब्द कहे वह यह थे कि اِنِّیۡ اَرٰی اَنۡ تَأۡمُرَ جَمۡعَ الۡقُرۡاٰنِ मैं उचित समझता हूँ कि आप क़ुरआन को एक पुस्तक के रूप में जमा करने का हुक्म दें। यह नहीं कहा कि आप उस को लिखवा लें। फिर हज़रत अबू बकर रजि ने ज़ैद रज़ि को बुला कर कहा कि क़ुरआन जमा करो। अतः फ़रमाया इजम उसे एक जगह जमा कर दो। यह नहीं कहा कि उसे लिख लो। अतः शब्द ख़ुद बता रहे हैं कि उस वक़्त क़ुरआन के पृष्ठों को एक जिल्द में इकट्ठा करने का प्रश्न था लिखने का प्रश्न न था।

चौथा यह आरोप था कि पवित्र क़ुर्आन में कुछ लोगों के सम्बन्ध में اَلَّذِیۡنَ جَعَلُوا الۡقُرۡاٰنَ عِضِیۡنَ आया है। अतः याद रखना चाहिए कि इस का यह अर्थ नहीं कि लोग क़ुरआन को टुकड़े-टुकड़े करते थे। बल्कि उस का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला काफ़िरों पर वैसा ही अज़ाब अवतरित करेगा जैसा उन लोगों पर किया जो क़ुरआन के कुछ हिस्सों का अनुकरण करते हैं और कुछ पर नहीं करते। इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि यहां काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का वर्णन है। और यदि यही अर्थ किए जाएं कि क़ुरआन के टुकड़े-टुकड़े करते थे तो यह भी हमारे लिए लाभदायक है। क्योंकि इस से मालूम हुआ कि क़ुरआन उस वक़्त जमा था। इसलिए दुश्मन उस के टुकड़े-टुकड़े करते थे। मुसलमानों के पास क़ुरआन महफ़ूज़ था परन्तु मुनाफ़िक़ उस के टुकड़े-टुकड़े रखते थे।

पांचवा यह जो कहा जाता है कि चूँकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अनपढ़ थे इसलिए कातिब जो चाहते लिख देते। इस का उत्तर यह है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले से ही इस का प्रबन्ध कर लिया था और वह यह कि जब वह्यी अवतरित होती तो कातिब को कहते लिख लो और चार आदमियों को कहते याद कर लो। इस तरह लिखने वाले की ग़लती याद करने वाले ठीक करा सकते थे और याद करने वालों की ग़लती लिखने वाला बता सकता था। मान लो लिखने वाले ने शब्द ग़लत लिख लिया परन्तु याद करने वाले उस ग़लती के साथ कैसे सहमत हो सकते थे, इस तरह शीघ्र ग़लती पकड़ी जा सकती थी।

छठा यह जो कहा जाता है कि हज़रत उस्मान रज़ि के समय क़ुरआन के पढ़ने में बहुत मतभेद हो गया था। इस का जवाब यह है कि किसी सही रिवायत से यह पता नहीं लगता कि हज़रत उस्मान रज़ि के समय क़ुरआन के सम्बन्ध में मतभेद हो गया था। बल्कि साफ़ लिखा है कि क़िरअत में मतभेद था। और हदीसों से

सिद्ध है कि सात क़िरअतों पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन पढ़ा। चूँकि कुछ क़ौमों के लिए कुछ शब्दों का उच्चारण करना मुश्किल था। इसलिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वह्यी के द्वारा बतलाया जाता कि इन शब्दों को इस तरह भी पढ़ सकते हैं। इस बारे में रिवायतों में आता है कि हज़रत अली रज़ि ने वर्णन किया कि हज़रत उस्मान रज़ि ने उन्हें बुला कर कहा कि विभिन्न क़बीलों के लोग कहते हैं कि हमारी क़िरअत सही है और इस पर झगड़ा पैदा हो रहा है इसलिए उस का फ़ैसला होना चाहिए। हज़रत अली रज़ि ने कहा आप ही फ़ैसला कर दें। उन्होंने यह फ़ैसला किया कि चूँकि मुसलमान हो कर अब सब एक हो गए हैं इसलिए एक ही क़िरअत होनी चाहिए और वह क़ुरैश वाली क़रिअत है।

सातवां यदि किरअत में मतभेद न था तो हज़रत अबू बकर रज़ि के वक़्त के क़ुरआन जलाए क्यों गए? इस का जवाब यह है कि यह भी साफ तौर पर ग़लत है। वहां तो यह लिखा है कि हज़रत हफ़सा रज़ी अल्लाह अन्हा के पास हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो के ज़माने का क़ुरआन था। वह उनसे मंगवाया गया और कहा गया कि नक़ल करने के बाद वापस कर दें। और फिर वापस कर दिया गया। और जलाए विपरीत क़िरअत वाले क़ुरआन गए थे ताकि किरअतों का मतभेद न रहे।

आठवां यह जो कहा गया है कि क़ुरआन की असलीयत पर सिर्फ ज़ैद रज़ि की गवाही है, यह भी भूल है। हज़रत अबू बकर रज़ि ने ज़ैद रज़ि के साथ हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्हो को रखा और मस्जिद के दरवाज़ा पर बिठा दिया। और आदेश दिया कि कोई तहरीर उनके पास ऐसी न लाई जाए जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लिखाई हुई न हो और जिसके साथ दो गवाह न हों जो यह कहें कि हमारे सामने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह लिखवाई थी।

नौवां एक आरोप यह लगाया जाता है कि यदि मतभेद नहीं था तो हज़रत उस्मान रज़ि के समय दोबारा तहक़ीक़ की आवश्यकता क्यों पड़ी। इस का जवाब यह है कि क़िरअत की तहक़ीक़ कराई गई थी इबारतों और सूरतों की तहक़ीक़ नहीं करवाई गई

दसवां इस तरह यह जो कहा गया है कि यदि मतभेद न था तो एक के सिवा बाक़ी कापियां क्यों जलाई गईं। इस का भी वही जवाब है कि विभिन्न क़िरअत वाली कापियां जलाई गई थीं। अत: यह जो कहा जाता है कि हज़रत उस्मान रज़ि के ख़लीफ़ा होने के वक़्त बहुत क़ुरआन थे परन्तु उनके बाद एक रह गया। इस का यही अभिप्राय है कि उन्होंने विभिन्न क़िरअतों को उड़ा दिया और फिर जिन क़ौमों की क़िरअतों को मिटाया गया उन्होंने यह एतराज़ किया।

अत: परिणाम यह निकला कि वर्तमान क़ुरआन वही है जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में था। इस में कोई मतभेद नहीं है

मुहकमात और मुतशाबिहात

अब मैं मुतशाबिहात के सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप से कुछ वर्णन कर देता हूँ। आरोप लगाया जाता है कि क़ुरआन में मुहकमात भी हैं और मुतशाबिहात भी, फिर क़ुरआन का क्या भरोसा रहा?

मूल बात यह है कि क़ुरआन के मुतशाबिहात पर ग़ौर ही नहीं किया गया। सूरत आले इमरान में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

هُوَ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ عَلَیۡکَ الۡکِتٰبَ مِنۡہُ اٰیٰتٌ مُّحۡکَمٰتٌ ہُنَّ اُمُّ الۡکِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِہٰتٌ

(सूरह आले इम्रान आयत 8)

कि वह ख़ुदा ही है जिसने इस क़ुरआन को अपने रसूल पर उतारा। इस में कुछ तो मुहकमात हैं जो उम्मुल क़िताब हैं और कुछ मुतशाबेहात हैं।

इस के सम्बन्ध में लोग कहते हैं। हमें क्या मालूम कि कौन सी आयत मुहकम है और कौन सी मुतशाबेह। इस के मुक़ाबला में सूरह हूद में आता है:

کِتٰبٌ اُحۡکِمَتۡ اٰیٰتُہٗ ثُمَّ فُصِّلَتۡ مِنۡ لَّدُنۡ حَکِیۡمٍ خَبِیۡرٍ (सूरह हूद आयत 2)

कि यह पुस्तक वह है जिसकी सारी आयतें मुहकमात हैं। इस से ज़ाहिर में ऊपर की बात ग़लत हो गई कि क़ुरआन की कुछ आयतें मुतशाबेह हैं और कुछ मुहकम। तीसरी जगह आता है:

اَللّٰہُ نَزَّلَ اَحۡسَنَ الۡحَدِیۡثِ کِتٰبًا مُّتَشَابِہًا مَّثَانِیَ (सूरह अज़्ज़ुमर आयत 24)

अर्थात ख़ुदा ही है जिसने बेहतर से बेहतर बात अर्थात वह पुस्तक अवतरित फ़रमाई है जो मुतशाबेह है। इस से ज्ञात होता है कि क़ुरआन की सारी आयतें ही मुतशाबेह हैं। हालाँकि पहले सारी आयतों को मुहकम क़रार दिया गया था।

इस से साफ़ मालूम हो गया कि मुहकम और मुतशाबेह का अभिप्राय और था जो समझा नहीं गया। और अजीब बात यह है कि मुतशाबेह के अर्थ यह लिए जाते हैं कि जिससे शंकाऐं पैदा हों। हालाँकि क़ुरआन मुतशाबेह की यह तफ़सीर करता है:

مَثَانِیَ تَقۡشَعِرُّ مِنۡہُ جُلُوۡدُ الَّذِیۡنَ یَخۡشَوۡنَ رَبَّہُمۡ ثُمَّ تَلِیۡنُ جُلُوۡدُہُمۡ وَقُلُوۡبُہُمۡ اِلٰی ذِکۡرِ اللّٰہِ

(सूरह अज़्ज़ुमर आयत 24) कि इस के विषय बहुत उच्च हैं और जो लोग इस पुस्तक को समझ कर पढ़ते हैं और अपने रब से डरते हैं। उनके रौंगटे खड़े हो जाते हैं। फिर उनके जिस्म का रोम रोम और उनके दिल अल्लाह तआला के ज़िक्र की ओर झुक जाते हैं। अर्थात उनके दिलों में ख़ुदा तआला की मुहब्बत के चश्मे फूट पड़ते हैं। अब बताओ क्या किसी शक की बात से इस तरह हो सकता है। साफ़ मालूम होता है कि मुतशाबेह का और अर्थ है और वह यह कि मुतशाबेह के अर्थ हैं जो दूसरी से मिलती हो अर्थात मुतशाबेह वह शिक्षा है जो पहली शिक्षाओं से मिलती जुलती हो। जैसे रोज़ा रखना है। यह आदेश अपनी ज़ात में मुतशाबेह है क्योंकि यह शिक्षा पहले भी पाई जाती थी। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

کُتِبَ عَلَیۡکُمُ الصِّیَامُ کَمَا کُتِبَ عَلَی الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِکُمۡ (सूरह अल्बक़र: आयत 184)

अत: केवल रोज़ा रखने का आदेश मुतशाबेह है। इसी तरह क़ुर्बानियों के सम्बन्ध में अल्लाह तआला फ़रमाता है وَلِکُلِّ اُمَّۃٍ جَعَلۡنَا مَنۡسَکًا (सूरह अल्हज्ज आयत 35) अर्थात हर क़ौम के लिए हमने क़ुर्बानी का एक तरीक़ा निर्धारित किया है। अत: क़ुर्बानी का हुक्म भी मुतशाबेह है। वास्तव में क़ुरआन ने इस में उन लोगों को

जवाब दिया है जिन्होंने यह कहा था कि क़ुरआन ने दूसरी पुस्तकों से चोरी करके सब कुछ प्रस्तुत कर दिया है। ख़ुदा तआला फ़रमाता है:

هُوَالَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ عَلَیۡکَ الۡکِتٰبَ مِنۡہُ اٰیٰتٌ مُّحۡکَمٰتٌ ہُنَّ اُمُّ الۡکِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِہٰتٌ

कि यह पुस्तक ऐसी है जिसमें कुछ शिक्षाएं तो नवीन हैं और कुछ शिक्षाएं ऐसी हैं जो निसन्देह पिछली शिक्षाओं से मिलनी चाहिऐं। जैसे पहले नबियों ने कहा सच बोला करो। क्या क़ुरआन यह कहता है कि सच न बोला करो। बल्कि झूठ बोला करो? अत: फ़रमाया क़ुरआन में कुछ शिक्षाएं ऐसी हैं जो पहली शिक्षाओं से मिलती हैं। परन्तु आगे फ़रमाता है:

فَاَمَّا الَّذِیۡنَ فِیۡ قُلُوۡبِہِمۡ زَیۡغٌ فَیَتَّبِعُوۡنَ مَاتَشَابَہَ مِنۡہُ ابۡتِغَآءَ الۡفِتۡنَۃِ وَابۡتِغَآءَ تَاۡوِیۡلِہٖ

(सूरह आले इम्रान आयत 8)

बेवक़ूफ़ लोग नवीन शिक्षाओं पर नज़र नहीं डालते और पहली शिक्षाओं से मिलती जलती शिक्षाओं को देखकर कहते हैं कि क़ुरआन ने यह नक़ल की है। वे केवल उपद्रव फैलाने के उद्देश्य से और इस पुस्तक को इस की वास्तविकता से फेर देने के लिए ऐसा करते हैं: وَمَا یَعۡلَمُ تَاۡوِیۡلَہٗۤ اِلَّا اللّٰہُ (सूरह आले इम्रान आयत 8) हालाँकि उनकी हक़ीक़त अल्लाह तआला ही जानता है और वही समझ सकता है कि कितनी शिक्षा दोबारा अवतरित करनी ज़रूरी है। इन्सान के हाथ में उसने यह काम नहीं रखा। क्योंकि यद्यपि वह शिक्षा पहले अवतरित हो चुकी होती है परन्तु फिर भी इस की वह हिस्सा जो भविष्य के लिए आवश्यक होता है। उस का फ़ैसला ख़ुदा तआला ही कर सकता है। कोई और नहीं कर सकता। और या फिर ख़ुदा तआला के ज्ञान देने के बाद वे लोग जो ख़ुदा तआला की पुस्तकों का मूल ज्ञान रखने वाले हैं समझ सकते हैं कि किस सीमा तक इस शिक्षा को क़ायम रखा जाना ज़रूरी था और किसी बात को क्यों बदला गया?

इस की और सहीह व्याख्यों भी हो सकती हैं। परन्तु उनमें मुहकम और मुतशाबेह को निर्धारित नहीं किया जा सकता। एक ही आयत एक वक़्त में मुहकम और एक वक़्त में मुतशाबेह हो जाती है। अर्थात जो आयत किसी की समझ में आ गई वह मुहकम हो गई और जो न आई मुतशाबेह हो गई परन्तु फिर मतभेद हो सकता है। हो सकता है कि एक व्यक्ति एक अर्थ की दृष्टि से किसी आयत को मुहकम क़रार दे दे और दूसरा उसे उचित न समझते हुए उसे मुतशाबेह कह दे परन्तु इन अर्थों में मुहकम आयतें बिलकुल ज़ाहिर हो जाती हैं। अर्थात वे कुरआन की शिक्षाएं जो पहली पुस्तकों से अधिक हैं वे सब मुहकम हैं और मुतशाबेह।

सारे क़ुरआन को मुहकम और सारे क़ुरआन को मुतशाबेह क्यों कहा गया है?

बाक़ी रहा यह प्रश्न कि फिर एक जगह सारे क़ुरआन को मुहकम और दूसरी जगह सारे क़ुरआन को मुतशाबेह क्यों कहा गया है। तो उस के सम्बन्ध में याद रखना चाहिए कि जैसा कि मैं बता चुका हूँ पवित्र क़ुर्आन की परिभाषा में मुहकम शिक्षा वही है जिसमें पवित्र क़ुर्आन ने नवीनीकरण किया है। और जिस बात में वह पहली पुस्तकों से मिलता है वह मुतशाबेह है। परन्तु एक दृष्टि से सारा ही क़ुरआन मुहकम

है। क्योंकि उसूलन किसी शिक्षा को देखते हुए उस के किसी एक टुकड़े को नहीं बल्कि सम्पूर्ण को देखते हैं। और आदेशों की विभिन्न बातों को सामूहिक रूप से देखा जाए तो इस्लामी शिक्षा बिलकुल अलग है। शिक्षा के किसी हिस्सा में भी उसने सुधार को तर्क नहीं किया और वे पहली पुस्तकों के बिलकुल मुशाबेह नहीं है, इसलिए वह सब मुहकम हैं। परन्तु इसी तरह चूँकि शरीयत के तमाम नियमों का पहली पुस्तकों में पहले लोगों के स्तर के अनुसार अवतरित होना भी ज़रूरी था ताकि पहले ज़माना के लोग भी अपनी अपनी सीमा में सम्पूर्णता प्राप्त करें इसलिए हर प्रकार के आदेश जो पवित्र क़ुर्आन में हैं किसी न किसी रूप में पहली पुस्तकों में भी मौजूद हैं इस दृष्टि से पवित्र क़ुर्आन सब का सब मुतशाबेह है। नमाज़ भी पहले धर्मों में है। रोज़ा भी है, हज भी है, ज़कात भी है और इस समानता को देखकर कुछ लोग धोखे में पड़ जाते हैं और विचार करते हैं कि पवित्र क़ुर्आन के अवतरण का फिर क्या लाभ हुआ। ईसाईयों में से "यनाबीयुल इस्लाम" इत्यादि पुस्तकों के लेखक इसी गिरोह में शामिल हैं जिन्होंने पवित्र क़ुर्आन की दूसरी पुस्तकों से मुशाबहत सिद्ध करके क़ुरआन को झूठा क़रार दिया है। हालाँकि पवित्र क़ुर्आन ने पहले से इस आरोप का वर्णन करके उस का निहायत स्पष्ट रूप से जवाब दे दिया है। सच्चाई यह है कि पवित्र क़ुर्आन ने यह एक ज़बरदस्त हक़ीक़त बताई है कि हर एक आसमानी ग्रन्थ के लिए ज़रूरी है कि उस के अंदर कुछ मुहकम हो और कुछ मुतशाबेह। मुतशाबेह इसलिए कि जो ग्रन्थ पहली शिक्षाओं से पूर्णतया जुदा हो जाता है वह ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हो सकता क्योंकि उस के यह अर्थ होंगे कि इस से पहले कोई शख़्स ख़ुदा का चुना हुआ ही नहीं और ख़ुदा तआला ने किसी को हिदायत दी ही नहीं, और यह झूठ होगा। और मुहकम इसलिए कि यदि वह कोई नवीन ख़ूबी दुनिया के सामने प्रस्तुत नहीं करता तो इस के आने की आवश्यकता क्या है, पहली शिक्षा तो मौजूद ही थी और कौन है जो इस असल की ख़ूबी का इन्कार कर सके या उस की सच्चाई को रद्द कर सके।

मुफ़स्सिरीन ने मुहकम और मुतशाबेह की व्याख्या में बहुत कुछ ज़ोर लगाया है। परन्तु इस वास्तविकता को न समझने के कारण उन्होंने बहुत कुछ धोखा खाया है।

अब चूँकि सर्दी बढ़ रही है और बादल भी घिरे हुए हैं इसलिए मैं इसी पर अपनी तक़रीर को समाप्त करता हूँ और अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि वह आप लोगों को पवित्र क़ुर्आन के समझने और उस पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

(इस तक़रीर के बाद हुज़ूर ने सारे लोगों के साथ मिलकर दुआ की और फिर ख़ुदा तआला के समक्ष इस बात पर शुक्र का सज्दा किया कि उसने हुज़ूर को सेहत की कमज़ोरी के बावजूद जलसा में शामिल हो कर तक़रीर करने और फिर सब के साथ मिलकर दुआ करने की तौफ़ीक़ अता की। फ़ल्हमदो लिल्लाह अला ज़ालिक। (क़ुर्आन की विशेषताएं भाग-1, पृष्ठ 28-48) समाप्त

☆ ☆ ☆

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोधी अलेक्ज़ेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की अत्यंत महत्त्वपूर्ण और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

आज का दिन जमाअत अहमदिया अमरीका की तारीख़ में एक तारीख़ साज़ और अत्यधिक मुबारक दिन है। हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अमरीका के लिए अपनी पांचवी यात्रा इख़तेयार फ़रमाई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अमरीका का पहली यात्रा 16 जून से 24 जून 2008 मे इख़तेयार फ़रमाई थी। फिर चार साल बाद 2012 ई. में हुज़ूर अनवर अमरीका तशरीफ़ ले गए थे और 16 जून से 3 जुलाई अमरीका में क़ियाम रहा। इसी यात्रा के दौरान 27 जून 2012 को हुज़ूर अनवर ने कैपीटल हिल में अपना एतिहासिक ख़िताब फ़रमाया था।

इसके बाद अगले ही साल हुज़ूर अनवर ने अमरीका के पश्चिमी क्षेत्र (west coast) लास अंजेलीज़ का सफ़र इख़तेयार फ़रमाया था। इस सफ़र में हुज़ूर अनवर का क़ियाम 4 मई से 15 मई तक रहा और मुख़्तलिफ़ प्रोग्रामों का आयोजन हुआ। फिर साल 2018 ई. में हुज़ूर अनवर ने अमरीका का चौथा सफ़र इख़तेयार फ़रमाया यह सफ़र 15 अक्तूबर से 5 नवंबर के अरसा पर मुश्तमिल था। इस सफ़र में हुज़ूर अनवर दो से तीन रोज़ के लिए गोइटे माला भी तशरीफ़ ले गए थे।

आज इस पांचवें सफ़र और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यधिक मुबारक दौरा का आग़ाज़ शहर zion से हो रहा है।

लंदन से अमरीका के लिए रवानगी 26 सितंबर सोमवार के दिन1 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए अहबाब जमाअत पुरुषों महिलाओं जमा थे। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और अपना हाथ हिला कर सबको अस्सलामो अलैकुम कहा। इसके बाद एयरपोर्ट के लिए रवानगी हुई। क़रीबन 1 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ हीथ्रो एयरपोर्ट पर पहुंचे और स्पैशल लाऊंज में तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर की आमद से क़बल एक स्पैशल इंतेज़ाम के तहत सामान की बुकिंग और बोर्डिंग कारडज़ के हुसूल की कार्रवाई मुकम्मल हो चुकी थी। एयरपोर्ट पर हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए आदरणीय रफ़ीक़ अहमद हयात साहिब अमीर जमाअत यू.के, आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा वक़ास अहमद साहिब नायब सदर मज्लिस अन्सारुलाह यू.के और आदरणीय मेजर महमूद अहमद साहिब अफ़्सर हिफ़ाज़त ख़ास हुज़ूर

अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ आए थे।

जमाअत अहमदिया अमरीका ने सफ़र के ताल्लुक़ से बाअज़ उमूर की तकमील के लिए दो अफ़राद आदरणीय मुनइम नईम साहिब चेयरमैन ह्यूमैनिटी फ़रस्ट अमरीका और आदरणीय डाक्टर तनवीर अहमद साहिब पर मुश्तमिल वफ़द लंदन भिजवाया था। अमरीका से आने वाले ये दोनों अहबाब भी इस सफ़र में क़ाफ़िला के साथ थे।

2 बजकर 45 मिनट पर एक ख़ुसूसी प्रोटोकोल इंतेज़ाम के तहत हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला जहाज़ पर सवार हुए। यूनाईटिड एयर लाईन की परवाज़ (UA959) 3 बजकर 20 मिनट पर हीथ्रो एयरपोर्ट लंदन से शिकागो (अमरीका) के लिए रवाना हुई। क़रीबन साढ़े आठ घंटे की मुसलसल परवाज़ के बाद शिकागो के मुक़ामी वक़्त के मुताबिक़ 5 बजकर 53 मिनट पर जहाज़ शिकागो के o'hare इंटरनैशनल एयरपोर्ट पर उतरा। शिकांगो (अमरीका) का वक़्त बर्तानिया के वक़्त से 6 घंटे पीछे है।

अमरीका में हुज़ूर अनवर का आना

और हृदय से स्वागत

अमीर साहिब यू. एस. ए. आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब और नायब अमीर यू. .एस. ए आदरणीय डाक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब ने जहाज़ के दरवाज़ा पर हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा।

यूनाईटिड एयर लाईन के टर्मीनल 5 शिकागो के अस्सिटैंट मैनेजर mr.chris sances शिकागो एयरपोर्ट अथार्टी के मैनेजर mr.ben sipiora लोकल पुलिस चीफ़ और कस्टम बॉर्डर पैट्रोल वी आई पी रेसेप्शन इंचार्ज Mr. parisi ने भी जहाज़ के दरवाज़ा पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का इस्तक़बाल किया और एक ख़ास प्रोटोकोल इंतेज़ाम के तहत हुज़ूर अनवर को एक ख़ुसूसी लाऊंज में अपने साथ लेकर आए।

लाऊंज में वसीम मलिक साहिब नायब अमीर अमरीका, अमजद महमूद ख़ान साहब नैशनल सैक्रेटरी उमूर ख़ारिजा ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा। लाऊंज में आदरणीया साहबज़ादी अम्तुल मुसव्विर साहिबापत्नी आदरणीय अमीर साहिब यू. एस. ए. ने हज़रत बेगम साहिबा खुदा आप की आयु में बरकत दे को स्वागतम कहा। इसी लाऊंज में इमीग्रेशन ऑफीसर ने आकर पासपोर्ट देखे। 6 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ एयरपोर्ट से बाहर तशरीफ़ लाए तो आदरणीय डाक्टर हमीदुर्रहमान साहिब नायब अमीर यू. एस. ए., आदरणीय अज़हर हनीफ़ साहिब नायब अमीर और मुब्लिलग़ इंचार्ज यू. एस. ए., आदरणीय मुख़तार अहमद मिलही साहिब नैशनल जनरल सैक्रेटरी, आदरणीय डाक्टर बिलाल राना साहिब नैशनल सैक्रेटरी उमूर-ए-आमा, मलिक बशीर अहमद साहिब नैशनल अमीर, आदरणीय शमशाद अहमद नासिर साहिब मुब्लिलग़ साउथ वर्जीनिया और आदरणीय इरशाद अहमद माही साहिब मुबल्लिग़ शिकागो ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का इस्तक़बाल करते हुए ख़ुश-आमदीद कहा।

अब एयरपोर्ट से ज़ाइन जमाअत के मर्कज़ "मस्जिद फ़तह अज़ीम" के लिए रवानगी थी। टर्मीनल 5 शिकागो एयरपोर्ट के अस्सिटैंट मैनेजर हुज़ूर अनवर के साथ थे। मौसूफ़ ने लाऊंज में अपनी ख़ाहिश का इज़हार करके हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाई थी। जब हुज़ूर अनवर एयरपोर्ट से बाहर गाड़ी में बैठ रहे थे तो यह मैनेजर हुज़ूर अनवर की गाड़ी के पास खड़े थे और उनकी आँखों में आँसू थे। कहने लगे कि आज मेरी सारी ज़िंदगी का एक रुहानी तजुर्बा है। पता नहीं कि दुनिया में मेरी कौन सी नेकी काम आई है कि मुझे इतनी बड़ी रुहानी शख़्सियत से मिलने का अवसर मिला है और मुझे इस शख़्सियत की क़ुरबत नसीब हुई है और मुझे इतनी बड़ी जज़ा मिली है। आज का वाक़िया सारी ज़िंदगी याद रखने वाला वाक़िया है।

शिकागो एयरपोर्ट टर्मीनल 5 के मैनेजर mr.ben sipiora ने भी अपनी ख़ाहिश का इज़हार करके हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाई। मौसूफ़ इन दिनों धुट्टी पर थे।जब उनको इलम हुआ कि ख़लीफ़तुल मसीह आ रहे हैं तो उन्होंने अपनी रुख़स्त निरस्त कर दी और हुज़ूर अनवर के इस्तक़बाल और हुज़ूर अनवर से मिलने के लिए आ गए। कहने लगे जब साल 2012 में शिकागो आए थे तो उस वक़्त में मिल नहीं सका था आज इलम होने पर में अपनी रुख़स्त ख़त्म करके हुज़ूर को देखने और मिलने के लिए आया हूँ। 6 बजकर 45 मिनट पर एयरपोर्ट से रवाना हो कर क़रीबन एक घंटा के सफ़र के बाद 7 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ज़ायन जमाअत में पधारना हुआ।

"मस्जिद फ़तह अज़ीम" को बिजली के रंग बिरंगे क़ुमक़ुमों से सजाया गया था। जिसके बायस मस्जिद के इर्दगिर्द का बड़ा अहाता भी रोशन था। अपने प्यारे आक़ा के इस्तक़बाल और हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक की एक झलक देखने के लिए अमरीका के इस ख़ित्ता के दूर दराज़ शहरों और बस्तियों में आबाद हुज़ूर अनवर के चाहने वाले सैंकड़ों की संख्या में सुबह से ही यहां पहुंचना शुरू हो गए थे। पुरुषों महिलाओं और बच्चों बूढ़ों का एक हुजूम था जो अपने प्यारे और महबूब आक़ा की ज़यारत के लिए बेताब था।

ज़ायन की जमाअत के इलावा ये उश्शाक ऑस्टन, बाल्टीमोर, बोस्टन, बरोकलेन, बे-प्वाईंट, सैंटर्ल जर्सी, शिकागो, कोलंबस, हवाई, डेटन, डेट्रॉइट, डलास, अटलांटा, हार्ट फ़ोर्ड, हीवसटन, इंडियाना, कंसास सिटी, सयाटिल, सेंट लूइस, लॉग आईलैंड, मेरी लैंड, आइयोवा, मियामी, मिलवाकी, नॉर्थ जर्सी, नॉर्थ वर्जीनिया, पोर्ट लैंड, न्यूयार्क, वाशिंगटन, रिचमंड, सेकरामंटो, फ़लाडलेफ़या, पिट्सबर्ग, फ़ीनेक्स, औशकोशि, ओरलैंडो, सेंट पाल, साउथ वर्जीनिया, तोसान, विलंगबरो, यार्क औरसा कियूज़ की जमाअतों से भी आए थे।

फिर कुछ जमाअतों से अहबाब बड़े लंबे और तवील सफ़र तै कर के अपने प्यारे आक़ा के इस्तक़बाल के लिए ज़ायन पहुंचे थे। अल्-अबामा से आने वाले 782 मील, शारकट से आने वाले 813 मील, बरोकलेन आने वाले 839 मील, एल्बानी से आने वाले 864 मील और डलास आने वाले 961 मील का सफ़र तै कर के ज़ायन पहुंचे थे।

इसी तरह लास वेगास से आने वाले अहबाब 1778 मील, तोसान से आने वाले 1784 मील, सयाटिल से आने वाले 2014 मील, लास अंजलीज़ से सफ़र करके आने वाले 2046 मील और सेकरामंटो की जमाअत से आने वाले अहबाब 2072 मील की लम्बी यात्रा करके अपने प्यारे आक़ा के दीदार और इस्तक़बाल करने

के लिए ज़ायन पहुंचे थे।

इन अहबाब पुरुषों महिलाओं में से एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की थी जिन्हों ने अपनी ज़िंदगी में पहली बार हुज़ूर अनवर का दीदार करना था और अपने प्यारे आक़ा को अपने क़रीब से देखना था। उनका एक-एक लम्हा बड़ी बेताबी से गुज़र रहा था। एम.टी.ए. के कैमरे इस्तक़बाल के इस सारे दृश्य को फिल्मा रहे थे। प्रत्येक की नज़र उस बैरूनी गेट पर लगी हुई थी जहां से किसी वक़्त भी हुज़ूर अनवर की गाड़ी इस अहमदिया सैंटर में दाख़िल होने वाली थी।

आख़िर वह अत्यधिक बाबरकत और प्रत्येक के लिए यादगार और तारीख़ साज़ लम्हा आ पहुंचा। ठीक 7 बजकर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए और अपना हाथ बुलंद कर के सबको अस्सलामो अलैकुम कहा। दूसरी तरफ़ भी अहबाब के हाथ बुलंद हो गए। हुज़ूर अनवर अपने उश्शाक को देख रहे थे और उन उश्शाक और ख़िलाफ़त के फ़िदाई परवानों की नज़रें अपने महबूब इमाम के चेहरा मुबारक पर टिकी हुई थीं। बहुतों की आँखों में आँसू उमड़ आए थे। अहबाब नारे बुलंद कर रहे थे। महिलाएं एक दूसरे प्रांगड़ में थीं। हुज़ूर अनवर अपने उश्शाक के दरमयान से गुज़रते हुए महिलाओं की तरफ़ तशरीफ़ ले आए और अपना हाथ बुलंद करते हुए अस्सलामो अलैकुम कहा। हर तरफ़ से वाअलैकुम अस्सलाम की आवाज़ें बुलंद हुईं, महिलाएं और बच्चियां अपने हाथ हिलाते हुए अपने प्यारे आक़ा को ख़ुश-आमदीद कह रही थीं। आज ज़ायन की सरज़मीन पर भी इश्क़-ओ-मुहब्बत की नई दास्तानें रक़म हो रही थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के क़ियाम का इंतिज़ाम "मस्जिद अज़ीम" के बैरूनी अहाता में वाक़्य गेस्ट हाऊस में किया गया था। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए 8 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर ने मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

संक्षिप्त तारीख़ जमाअत अहमदिया अमरीका

जमाअत अहमदिया अमरीका की तारीख़ में साल 1920 को एक ख़ास एहमियत हासिल है जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के इरशाद पर लंदन से हज़रत डाक्टर मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो अमरीका के पहले मुबल्लिग़ के तौर पर 26 जनवरी 1920 को बर्तानिया की बंदरगाह liverpool से रवाना हुए और 21 दिन के सफ़र के बाद 15 फ़रवरी 1920 ई. को अमरीका की बंदरगाह फ़लाडलाफ़ीया पर उतरे लेकिन आपको मुल्क के अंदर दाख़िल होने से रोक दिया गया और फ़ैसला किया गया कि आप जिस जहाज़ में आए हैं इसी में वापस चले जाएं। हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस फ़ैसला के ख़िलाफ़ महकमा आबाद कारी वाशिंगटन में अपील की। इस पर आपको समुंद्र के किनारे एक मकान में बंद कर दिया गया और क़ैद कर दिया गया। इस मकान से बाहर निकलने की सहायता थी। परन्तु छत पर टहल सकते थे उस का दरवाज़ा दिन में सिर्फ दो मर्तबा खुलता था।

इस मकान में कुछ यूरोपीयन भी नज़रबंद थे। हज़रत मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अवसर से फ़ायदा उठा कर अपने साथी क़ैदियों को तब्लीग़ करनी शुरू कर दी जिसके नतीजा में दो माह के अंदर पंद्रह क़ैदियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया।

अमरीका की सरज़मीन पर बैअत करने वाले पहले अहमदी का नाम Mr. r.i.rochford था इसके इलावा बैअत करने वालों का ताल्लुक़ जमैका ब्रिटिश गयाना, पोलैंड, रशिया, जर्मनी azores बलजीयम, पुर्तगाल, इटली और फ्रांस से था।

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो को जब यह इत्तिला मिली कि हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो को अमरीका में क़ैद कर दिया गया है तो आपने अमरीकी हुकूमत के इस रवैय्या पर सख़्त अफ़सोस का इज़हार करते हुए फ़रमाया "अमरीका जिसे ताक़तवर होने का दावा है इस वक़्त तक उसने माद्दी सल्तनतों का मुक़ाबला किया और उन्हें शिकस्त दी होगी। रुहानी सलतनत से इस ने मुक़ाबला कर के नहीं देखा। अब अगर उसने हमसे मुक़ाबला किया तो उसे मालूम हो जाएगा कि हमें वह हरगिज़ शिकस्त नहीं दे सकता क्योंकि ख़ुदा हमारे साथ है। हम अमरीका के इर्दगिर्द के इलाक़ों में तब्लीग़ करेंगे और वहां के लोगों को मुस्लमान बना कर अमरीका भेजेंगे और उनको अमरीका नहीं रोक सकेगा। और हम उम्मीद रखते हैं कि अमरीका में एक दिन

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

की सदा गूँजेगी और ज़रूर गूँजेगी।

मई 1920 में अमरीकी हुकूमत की तरफ़ से हज़रत मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हो से पाबंदी उठा ली गई जिसकी फ़ौरी वजह यह बनी कि ऐसा न हो कि आप नज़रबंद समस्त क़ैदियों को मुस्लमान बना लें। इसलिए हुक्काम ने आपके अमरीका में दाख़िल होने का फ़ैसला कर दिया। हज़रत मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने न्यूयार्क में एक मकान किराए पर लेकर जमाअत के मिशन का आगाज़ किया। फिर 1921 ई. में आप शिकागो मुंतक़िल हो गए और बाक़ायदा एक इमारत ख़रीद कर जमाअती मर्कज़ क़ायम किया। यह मकान बतौर मिशन हाऊस, रिहायश और बतौर मस्जिद प्रयोग होता था जुलाई 1921 ई. में आपने उसी मिशन हाऊस से जमाअत अमरीका के रिसाला muslim sunrise का इजरा किया। यह रिसाला आज भी बाक़ायदगी से शाय हो रहा है।

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अमरीका के समस्त बड़े शहरों और प्रत्येक स्टेट में अहमदिया जमाअतें क़ायम हो चुकी हैं। अमरीका में वक़्त 58 मुक़ामात पर मुस्तइद और फ़आल जमाअतें क़ायम हो चुकी हैं 56 मसाजिद और 60 मिशन हाऊसज़ हैं। बाअज़ मुक़ामात पर बड़ी वसीअ-ओ-अरीज़ इमारतें और मसाजिद तामीर की गई हैं। नई मसाजिद और मिशन हाऊसज़ की तामीर का सिलसिला मुसलसल जारी है।

यह वही है जहां 1920 में जमाअत अहमदिया के पहले मुबल्लिग़ हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो को मुल्क के अंदर दाख़िल

होने से रोक दिया गया था और आपको क़ैद कर दिया गया था। इस वक़्त हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया था कि "अमरीका हमें हरगिज़ शिकस्त नहीं दे सकता अमरीका में एक दिन

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

की सदा गूँजेगी और ज़रूर गूँजेगी।"

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सारे अमरीका में गांव गांव शहर शहर अहमदी आबाद हैं और अमरीका के चप्पा चप्पा पर दिन रात

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

की सदा गूंज रही साल 2020 ई. में जमाअत अमरीका के क़ियाम पर सौ साल मुकम्मल हुए हैं और जमाअत अमरीका अपनी सद साला जुबली मना रही है और जमाअत की मुख़्तलिफ़ तक़रीबात और प्रोग्राम जारी हैं।

जान अलेक्जेंडर डोवी के शहर zion में मस्जिद फ़तह अज़ीम की तामीर भी अमरीका की सद साला जुबली की तक़रीबात का एक अत्यधिक अहम प्रोग्राम है। इस का उद्घाटन इन शा अल्लाह इस दौरा में होगा जहां उसकी मुकम्मल तफ़सील दर्ज की जाएगी।

हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ज़ायन की सरज़मीन से शुरू होने वाला यह दौरा अत्यधिक ग़ैरमामूली बरकतों और कामयाबियों का हामिल दौरा है और उसके नतीजा में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया की अज़ीमुश्शान प्रगतियों और फ़ुतूहात के नए दरवाज़े खुलने वाले हैं और जमाअत अहमदिया अमरीका कामयाबियों के एक नए दौर में दाख़िल होने वाली है और यही तक़दीर-ए-इलाही है जो ज़ाहिर हो रही है। **(शेष ...)**

☆ ☆ ☆

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

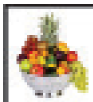

يُنبِتُ لَكُم بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ (النحل ۱۱)

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT
Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal.com flipkart.com
amazon.com Paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH :2328-1016

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081
Guddu Book Store
All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools
Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536
MANUFACTURER and WHOLE SELLER
Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443
Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers
Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993
Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक
WASIMA STONE CRUSHER
Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
Mob. : 09986670102
09036915406
Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq
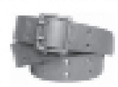
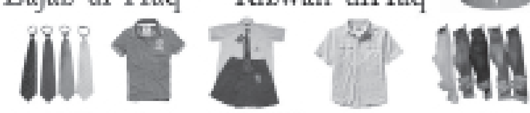
Al-Fazal Garments
Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.
Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

127 वां जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 23,24,25 दिसंबर 2022 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 127वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 23,24,25 दिसंबर 2022 ई. (शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की स्वीकृति प्रदान की है। अहबाब जमाअत अभी से इस जलसा सालाना में सम्मिलित होने की नीयत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सबको ख़ुदा की खातिर आयोजित किए जा रहे इस जलसे से लाभ उठाने का सामर्थ्य प्रदान करे। इस जलसे की कामयाबी और हर प्रकार से बाबरकत होने के लिए इसी प्रकार सईद रूहों की हिदायत का कारण बनने के लिए दुआएं करते रहें। अल्लाह तआला आपको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया, क़ादियान)

☆ ☆ ☆